REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

हेमचंद्राचार्य के गुजरात का सांस्कृतिक विकास में प्रदान

डा.मयंक टी. बारोट
आसी.प्रोफसर, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

❊ सारांश :

गुजरात के सोलंकी युग की विशेषता यह थी की, उस युग दरम्यान सिफ राजकीय और आर्थिक द्रष्टि से ही गुजरात समृध्ध न था लेकिन सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में भी गुजरात की नामना थी। सोलंकीकालीन साहित्यकारो में आचार्य हेमचंद्र का नाम प्रथम पंक्ति में रखना पडे। साहित्य और व्याकरण के क्षेत्र में उन्होने किये हुए प्रदान के कारण विद्वानो ने उनको कलिकाल सर्वज्ञ का बिरुद दिया था।

हेमचंद्राचार्य एक महान जैनसूरि प्रखर विद्वान और गुजरात के अग्रणी संस्कार प्रधान पुरुष थे। गुजरात के सांस्कृतिक जीवन के विकास में आचार्य हेमचंद्र के योगदान को अब हम विस्तार से देखेंगे।

❊ हेमचंद्राचार्य का जीवन :

हेमचंद्राचार्य के जीवन के बारे में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश ग्रंथो में से बहोत जानकारी प्राप्त होती है। प्रभावकरचित, प्रबंध चिंतामणी, प्रबंधकोष, कुमारपाल, चरित जैसे ग्रंथ हेमचंद्राचार्य के जीवन और सर्जन के बारे में जानने के लिये उपयोगी ग्रंथ है।

हेमचंद्राचार्य का जन्म इ.स.१०८९ में हुआ था और मृत्यु इ.स.११७३ में हुई थी। उनका जन्म स्थल धंधुका था। उनके जन्म का नाम चांग था। पिता का नाम चाच और माता का नाम पाहिणी था। वह देवचंद्रसूरि के शिष्य थे। उन्होने पांच साल की उंमर में दिक्षा ली थी। दिक्षा ली उस वक्त उनका नाम सोमचंद्र था। उन्होने खंभात मुकाम पर दिक्षा ली थी। संस्कृत, पाकृत और अपभ्रंश का अभ्यास करके व्याकरण, काव्यलंकार, योग, न्याय, पुराण, तत्वज्ञान आदि का गहरा अभ्यास किया था। उनके ज्ञान से प्रभावित होकर हेमचद्रसूरीने अपने पाट पर उनको आचार्य पद पर स्थान दिया था। देवचंद्रसूरीने उनको सूरी पद की स्थापना करके उनका नाम हेमचंद्र रखा था। आचार्य बनने के बाद आशरे ६४ साल तक उन्होने गुजरात के सांस्कृतिक जीवन में युग पुरुष के तौर पर नामना प्राप्त की थी।

❊ हेमचंद्राचार्य के साहित्य सर्जन :

हेमचंद्राचार्य की मुख्य साहित्य कृतियाँ नीचे दी गई है।

(१) सिद्धहेम शब्दानुं शासन :

सिध्धराज के संपर्क में आने के बाद आचार्यश्री पाटण के राज्य दरबार के अमूल्य रत्न बन गये। सिध्धराज ने मालवा पर आक्रमण करके राजाभोज का अमूल्य ग्रंथ भंडार लूंटकर पाटण ले आया और आर्चा हेमचंद्र को अपूर्व ऐसे व्याकरण ग्रंथ लिखने की प्रेरणा मिली। इस ग्रंथ की रचना के लिए सिध्धराज ने काश्मीर और देश के अन्य भागो में से अलग-अलग व्याकरण की प्रत मंगवाई। उसका गहरा अभ्यास करके उन्होने सिद्धहेम शब्दानु शासन नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ तैयार किया। ग्रंथ का नाम सिध्धराज और हेमचंद्र के नाम के पहले दो अक्षर लेकर सिद्धहेम रखने में आया।

सिद्धहेम शब्दानुशासन ग्रंथ में आठ अध्याय है और हरेक अध्याय के चार (४) भाग है। अपना ग्रंथ सभी समुदाय के लोगो के लिये होने की वजह से उनके मंगल श्लोको में, सर्व दर्शन का समन्वय साधा है। इस ग्रंथ के पहले सात अध्यायो में संस्कृत व्याकरण और आखरी अध्याय में प्राकृत और अपभ्रंश व्याकरण का निरुपण किया है।

(२)द्रयाश्रय :

आचार्य हेमचंद्र के दूसरे महत्व के साहित्य ग्रंथ में द्रयाश्रय काव्य का समावेश होता है। द्रयाश्रय शब्द का अर्थ दो आश्रय या आधार ऐसा होता है। इस ग्रंथ व्याकरण तथा इतिहास ऐसे दो आधार लेकर रचा गया है। इसीलिए उसको द्रयाश्रय कहा जाता है। द्रयाश्रय को लगते हुए दो ग्रंथ है (१) संस्कृत दयाश्रय (२) प्राकृत द्रयाश्रय। प्रथम भाग में छः (६) सर्ग और दो हजार आठसो अठ्यासी श्लोक है। दूसरे भाग में आठ (८) सर्ग है।

श्रीमधु सुधन मोदीने उसका मूल्यांकन आंकर लिखा है कि - ''द्रयाश्रय काव्य य सिफ सोलंकीओं की किर्ती गाथा ही नहीं लेकिन गुजरात के तेजस्वी भूतकाल की किर्तीगाथा भी है।

(३)हेमचंद्राचार्य रचित अन्य ग्रंथ :

हेमचंद्राचार्य की सर्वतोमुखी प्रतिभा से सिफ व्याकरण के सर्जन से ही संतोष नहीं माना था। उन्होने अभिधान, चिंतामणी और काव्यसंग्रह, निघंटुकोश, देशीनाम माला जेसे शब्द कोश, धातुपारायण, लिंगानुं शासन, प्राकृत व्याकरण और एसके भाग रुप अपभ्रंश व्याकरण को सर्वप्रथम रचना की। उन्होने काव्यानुशासन और छंदानुशासन की भी रचना की। कुमारपाल की विनंती से उनका योगशास्त्र त्रिशिष्टाशलनीका पुरुषरचित जैसे ग्रंथी रचना की।

(४)हेमचंद्राचार्यनुं शिष्यमंडल :

आचार्य हेमचंद्राचार्य का शिष्यमंडल बहोत विशाल था। राम चंद्रसूरी हमचंद्राचार्य के पट्टशिष्य थे। उन्होने नवविलाश, रघुविलास, यदुविलास, प्रकरण, यादवा भ्युध्यम आदि अगियार नाटक लिखे थे। रामचंद्र और गुणचंद्र रचित नाट्य दर्पण यह भारतीय नाट्यशास्त्र का एक उत्तम ग्रंथ माना जाता है।

हेमचंद्र के दूसरे शिष्य देवचंद्र ने चंद्रलेखा-विजयप्रकरण नामक नाटक रचा। शाकंभरी के अर्णोराज को कुमारपाल ने हराया इस पराक्रम का वर्णन है।

(५) गुजरात के इतिहास में हेमचंद्राचार्य का स्थान :

सोलंकीयुग दरम्यान गुजरात ने अनेकविध सिद्धियाँ हांसल की थी। सोलंकी युग का साहित्य और समाजजीवन आचार्य हेमचंद्र से बहोत प्रभावित रहा था।

गुजराती बोली का पहला प्रारंभ उनके द्वारा हुआ। अपभ्रंश साहित्य में गुजरात ने नामना दी। व्याकरण ग्रंथो और अन्य कृतियों द्वारा उन्होने गुजरात की साहित्यिक पहचान खडी की। योगशास्त्र की रचना के कारण उनकी तुलना पतंजलि जैसे महाऋषि के साथ को गई।

परहित यह धर्म और परपीडन यह अधर्म ऐसा हेमचंद्राचार्य का जीवनमंत्र था। जो उन्होने सिद्धराज और कुमारपाल जैसे महान राजाओ को शीखाया था। जीवध्य या अहिंसा का पालन यह उनकी धर्मव्याख्या का प्रथम चरण था। व्यसनमुक्ति दूसरा चरण था। जबकि मांसाहार निषेद तीसरा चरण था। यह तीनों चरण द्वारा उन्होने धर्म की व्याख्या लोकभाग्य बनाई। उन्होने रचे हुए साहित्य तथा उनकी कर्मशीलता को ध्यान में लेकर कह सकते है कि हेमचंद्राचार्य सोलंकीकालीन गुजरात के युग पुरुष थे। गुजरात की प्रजा के सास्कृतिक विकास में उनका महत्व का प्रदान था।

⁂ संदर्भग्रंथो :

(१) श्री र.छो.परीख और ह.ग.शास्त्री, ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-३ ओर ग्रंथ-४

(२) नवीनचंद्र आचार्य, ''गुजरात का सोलंकी कालीन इतिहास''
(३) हरिप्रसाद शास्त्री, ''गुजरात का प्राचीन इतिहास''

डा.मयंक टी. बारोट
आसी.प्रोफसर, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.